हिन्दी साहित्य का सामाजिक उत्थान पर प्रभाव
ISBN: 978-81-951728-6-3

साहित्य और समाज का सम्बन्ध

संगीता
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महा.
झुन्झुनू, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

मानव की संकल्पात्मक अनुभूतियों के संचित भण्डार का नाम साहित्य है। साहित्य में भावों एंव विचारों की श्रेयमयी पतितपावनी गंगा हृदय–हिमगिरी से निकलकर अनन्त काल से तीव्रगति से प्रवाहित हो रही है। साहित्य वाणी की साधना है, कल्पना की सृष्टि है, अनुभूति की चित्रपटी है और भावना की मनोहारिणी है पुस्करिणी है। वाटिका में भावों के विविध प्रसुन नित्यप्रति खिला करते है, मनोरागों के विहंग मधुर मुधर कलरव किया करते है, कल्पना की रंगबिरंगी तितलियां यत्र–तत्र करती है, बौद्धिक विचारों के भ्रमर मंडराया करते है और संवेदना वाटिका में विहार सहृदयों का मन इसी कारण आह्लादकारी बना रहता है, क्योंकि यहां सात्विकता का सम्राज्य बना रहता है, भावुकता का सर्व आधिपत्यरहता है, सहृदयता सर्वत्र भ्रमण करती रहती है, संवेदना सर्वत्र छायी रहती है, सरसता चतुर्दिक विहार करती रहती है, रागात्मकता अपनी बाहें फैलाये रहती है, मार्मिकता पग–पग पर पलक पावड़े बिछाये रहती है, ध्वन्यात्मकता

ISBN: 978-81-951728-6-3

हृदय में गुदगुदी उत्पन्न किया करती है और सौन्दर्यप्रियता अद्‌भुत आकर्षण उत्पन्न किया करती है।

डॉ. निषांत केतु के अनुसार ''साहित्य वही है जो अपनी संस्कृति को शब्दायित करता है। अपने श्रेष्ठ चरित्रों को सामने रखता है। जीवन के शाश्वत मूल्यों का स्मरण कराता है। सच में ऐसा ही साहित्य कालजयी होता है, जो कालान्तर में शास्त्र बनकर जीवित रहता है।''[1]

साहित्य अखण्ड आनन्द का अजस्त्र स्त्रोत है, व्यावहारिक ज्ञान का भण्डार है, लोक शिक्षा का अविरल प्रवाह है, लोक हित का अनन्त सिंधु है और ''संधः परनिवृति'' का शाश्वत मंदिर है। साहित्य की शीतल स्त्रोतवाहिनी में अवगाहन करने से रजस् और तमस् से विमुक्ति मिलती है, भौतिक कष्टों से छुटकारा प्राप्त होता है, लौकिक राग द्वेष से अवकाश मिलता है, मन का मैल कटता है, चित्र की चंचलता दूर होती है, बुद्धि का विक्षेप शान्त होता है, हृदय की अशान्ति दूर होती है और अखण्ड आनन्द की प्राप्ति होती है। डॉ. इन्द्रनाथ मदान के अनुसार ''साहित्य की प्रकृति वास्तव में उस शमी वृक्ष की भांति होती है जो बाहर तो शीतल होती हैं, परन्तु भीतर आग्नेय क्रांति का बड़वानल छिपाये होती है। इसकी प्रेरणा क्षणिय या सीमित नहीं होकर सार्वभौमिक और सार्वकालिक होती है।''[2]

प्रायः ''साहितस्य भावः साहित्यिम्'' के अनुसार सहित के भाव को साहित्य कहा जाता है। ''सहित'' का एक तो अर्थ ''साथ'' होता है अर्थात साहित्य में सम्पूर्ण विद्या, समस्त कला, सम्पूर्ण ज्ञान एंव

ISBN: 978-81-951728-6-3

सम्पूर्ण शास्त्रों का समावेश होता है, क्योंकि साहित्य सभी को अपने साथ लेकर चलता है। इसके अतिरिक्त हित अर्थात साहित्य हित को साथ लेकर चलता है। इसके साथ ही साहित्य में हित या कल्याण करने की सामर्थ्य होती है और वह मानव को प्रेम की अपेक्षा श्रेय की ओर अग्रसर करने में अधिक सहायक होता है। इतना ही नही ''हितेन सहितम् साहित्यम्'' के आधार पर साहित्य वह जो लोक मंगलकारी हो, जो श्रेयस्कर हो जो अमंगलों का विनाश करके मंगल प्रदान करने वाला हो, जो चिर दग्ध दुःखी वसुधा को शांति एंव सुख प्रदान कराने में सहायक हो और जो अखण्ड आनन्द का विधायक हो। साहित्य की ये व्याख्यायें जहां एक ओर साहित्य का प्रतिपादन करती है वहाँ दूसरी ओर साहित्य की उपलब्धियों की ओर भी स्पष्ट संकेत करती है। महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार ''ज्ञान–राशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है।''[3]

साहित्य के निर्माण में समाज का योगदान

अब प्रश्न यह उठता है कि साहित्य के निर्माण में समाज का क्या योगदान रहता है? उतर स्पष्ट है कि साहित्य जिन वैयक्तिक सुख–दुःख, आशा–निराशा, हास–परिहास, शोक–उल्लास, घृणा–प्रेम, राग–द्वेष, अनुराग–विराग आदि का निरूपण करता है, उनका उद्‌गमस्थल तो समाज ही है। सामाजिक जीवन की विविध स्थितियों एंव परिस्थितियों को चित्रित करना ही साहित्य का एकमात्र कार्य है। साहित्य की सम्पूर्ण खाद्य सामग्री समाज के समीप ही संचित है और उसी सामग्री से आवश्यक पोषक तत्व लेकर साहित्य अपने शरीर का

ISBN: 978-81-951728-6-3

निर्माण करता है। साहित्य समाज से ही कथावस्तु ग्रहण करता है, समाज से ही विभिन्न प्रकार के चरित्र लेता है, समाज से ही विविध ज्ञान–विज्ञान सम्बन्धी ज्ञातव्य बातें अंगीकार करता है, समाज से ही विविध भावों का संचयन करता है, समाज से ही विविध प्रकार के विचारों का संकलन करता है और समाज से ही जीवन एंव जगत् संबंधी नाना प्रकार की सामग्री प्राप्त करता है।

साहित्य भवन के निर्माण में जिस ईंट, चूना, गारा, सीमेन्ट, पत्थर आदि की आवश्यकता होती है वे सभी पदार्थ समाज के पास ही संकलित रहते है और प्रतिभाशाली साहित्यकार अपने–अपने साहित्य का निर्माण करने के लिये समाज से अपेक्षित सामग्री उचित मात्रा में ग्रहण किया करते है समाज से ही वे उन व्यावहारिक बातों को लेकर जनता के सामने प्रदर्शित किया करता है जिनके अध्ययन एंव अनुशीलन से समाज सुख समृद्धि की ओर कदम बढ़ा सकता है तथा समाज से वह उन जीवनोपयोगी बातों को लेकर जनता के सामने उपस्थित करता है, जिनकी जानकारी समाज की मंगलमय वृद्धि में सहायक होती है। इस प्रकार विविध अनुभवों विविध उपलब्धियों विविध मान्यताओं विविध जीवन मूल्यों, विविध परम्परागत विचारों, विविध आदर्शो, विविध मर्यादाओं आदि की नींव पर ही साहित्य के भवन का निर्माण होता है और इस सम्पूर्ण सामाजिक सामग्री को लेकर साहित्य अपने रूप को संजोया या सवांरा करता है इसलिये साहित्य समाज की सामग्री से निर्मित एक कलात्मक कृति है, समाज साहित्य का वह बीज है और साहित्य समाज रूपी बीज से

ISBN: 978-81-951728-6-3

विकसित वट वृक्ष है और साहित्य उन जलकणों से निर्मित विशाल सागर है। यही कारण है कि साहित्य के निर्माण में समाज का सर्वाधिक योग रहता है। विजेन्द्र स्नातक के अनुसार ''कवि या लेखक अपने समय का प्रतिनिधि होता है, उसे जैसी मानसिक खाद मिलती है, वैसी ही उसकी कृषि होती है। वह अपने समय के वायु मंडल में घुमते हुए विचारो को मुखरित कर देता है।''[4]

समाज के निर्माण में साहित्य का योगदान

जिस प्रकार साहित्य के निर्माण में समाज का सर्वाधिक हाथ रहता है उसी प्रकार समाज के निर्माण में साहित्य का भी योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। समाज को एक सही दिशा प्रदान करने में अथवा समाज का पथ प्रदर्शन करने में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहता है क्योंकि साहित्य ही समाज के भ्रमित मानवों को जीवन के महत्व की शिक्षा देता है, साहित्य ही उन्हें व्यावहारिक ज्ञान का उपदेश देता है। साहित्य की उन्हें विविध प्रकार की मनोवृतियों से परिचय कराता है साहित्य ही उन्हें विधिव भावों की जानकारी प्रदान करता है, साहित्य ही उन्हें जीवन मूल्यों से अवगत कराता है, साहित्य ही उन्हें आदर्शो की शिक्षा देता है, साहित्य ही उन्हें परम्परागत विचारों का परिचय देता है, साहित्य ही उन्हें अतीत जीवन की सफलता एंव विफलता से अवगत कराकर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है, साहित्य ही उन्हें वर्तमान जीवन की उन्नति एंव अवनति का परिचय देकर उनकी प्रगति का मार्ग खोल देता है और साहित्य ही उन्हें निर्दिष्ट उद्देश्य पूर्ति के योग्य बनाने के लिये उनके पथ की

ISBN: 978-81-951728-6-3

बाधाओं, रूकावटों एंव विघ्नों को स्पष्ट रूप प्रस्तुत किया करता है। साहित्य का एक मात्र लक्ष्य जीवन की व्याख्या करना है। साहित्य जीवन की व्याख्या इसलिये करता है जिससे समाज के व्यक्ति अपने जीवन का मूल्य समझे, अपने जीवन पथ की बाधाओं से परिचित हो, अपने जीवन प्रवाह को गतिशील बना सके, अपने जीवनावरोधों को मार्ग से हटाने में समर्थ हो, अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करके संसार के यथेष्ट भागों को भोगते हुये अन्त में आध्यात्मिक उन्नति द्वारा मोक्ष प्राप्ति में समर्थ हो। साहित्य समाज का चक्षु है, वह समाज को दिव्य दृष्टि प्रदान करके कंटकाकीर्ण पथ पर भी हसंते हंसते अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करता है। साहित्य समाज का शिक्षक है, वह सामाजिक सम्पूर्ण अज्ञान को दूर करके उसे लौकिक, व्यवहारिक एंव आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण बनाता हुआ समाज की मंगलमय वृद्धि के प्रयास करता है, साहित्य समाज की प्रज्ञा है वह समाज को सत् असत् पदार्थो से अवगत कराता हुआ उसे विवेक बुद्धि प्रदान करता है जिससे समाज प्रेमपथ का अनुगामी न होकर सदैव श्रेयपथ की ओर अग्रसर होने में रूचि प्रदर्शित करता रहे और माया के प्रपंचों से मुक्त होकर परमधाम को प्राप्त करने में सर्वथा समर्थ हो। प्रेमचन्द के अनुसार ''साहित्य चाहे निबन्ध के रूप में हो चाहे कथा के रूप में, उसे हमारे जीवन की व्याख्या और आलोचना करनी चाहिए।''[5]

साहित्य पर समाज का प्रभाव

ISBN: 978-81-951728-6-3

अब प्रश्न उठता है कि साहित्य समाज को किस तरह प्रभावित किया करता है? साहित्य कल्पना एंव भावना की सृष्टि है। इसमें भावुकता एंव सरसता एक ऐसा अद्भूत आकर्षण उत्पन्न कर देती है कि कठोर से कठोर ह्रदय भी साहित्य की सरस उक्तियों को सुनकर उनकी ओर आकृष्ट हुये बिना नही रहता। इसके अतिरिक्त साहित्य में जीवन के अन्तर्गत प्रवेश करने की भी सामर्थ्य होती है जो हठात् जन–जन के ह्रदय पर अपना प्रभाव डाला करती है और जनता साहित्य के अनुकूल बहने लगती है। हिन्दी साहित्य का आदिकाल इसका साक्षी है कि चारणों एंव भाटों की वीररसात्मक कविताओं को सुन–सुन कर किस तरह तत्कालीन वीर योद्धा युद्ध के मैदान में शौर्य एंव पराक्रम दिखाया करते थे। भक्तिकाल में भी तत्कालीन जनता शासको से त्रस्त और भयभीत होकर उस अगोचर सता के प्रति श्रद्धा एंव भक्ति प्रदर्शित करने लगी थी। रीतिकाल में भी श्रृंगार प्रधान रचनाऐं पढ़कर एंव सुनकर जनजीवन में भोग एंव ऐश्वर्य के प्रति लालसा जागृत हो गयी थी और किस तरह समाज काम क्रीडा का शिकार बनकर सतत् श्रृंगारमयी चेष्टाओं में लीन रहने लगा था। जैसे ही आधुनिक युग में आकर राष्ट्र–प्रेम, स्वदेश भक्ति एंव जनजागरण के गीत गाने आरम्भ किये, वैसे ही भोग विलास की मादक निंदा के लिये मन मचल उठा, उसने ऐश्वर्य भोगो को सदैव के लिए त्याग दिया। यह है साहित्य का प्रभाव, जो रूसो और वाल्टेयर के लेखों, द्वारा जन क्रांति का आह्वान कर सकता है जो मार्क्स और लेनिन के विचारों द्वारा रूस में खूनी क्रांति को बढ़ावा दे

ISBN: 978-81-951728-6-3

सकता है जो मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, नवीन, दिनकर आदि की कविताओं द्वारा समाज में तूफान खड़ा कर सकता है जो भगत सिह और आजाद जैसे वीरों की प्रेरणा का स्त्रोत बनता है। जो रास बिहारी बोस एंव सुभाषचन्द्र बोस को सुदृढ सम्राज्य से टकराने की प्रेरणा प्रदान करता है। तिलक, गांधी, नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री जैसे देश के कर्णधारों को राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये प्रेरित करता है। इस प्रकार साहित्य के पास समाज को प्रेरित करने की अनन्य शक्ति है।

हम कौन थे, क्या हो गये है और क्या होंगे अभी,
आओं विचारे आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।[6]

साहित्य और समाज का संबध

इस प्रकार साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध स्थापित हो जाता है। इसी कारण यदि समाज वृद्ध है तो साहित्य उसका फल है, यदि समाज शरीर है तो साहित्य उसका नेत्र है, यदि समाज बादल है तो साहित्य जल है, यदि समाज उसका नेत्र है, यदि समाज उससे निःसृत सुरसरि है, यदि समाज बसंत है तो साहित्य वासन्तिक छटा है और यदि समाज बिम्ब है तो साहित्य उसका प्रतिबिन्ब है साहित्य और समाज का यह संबंध आदिकाल से ही चला आ रहा है। समाज ही चेतना की साहित्य को चेतना प्रदान करती है और समाज की मृतावस्था किसी साहित्य को भी मृत बना देती है। आज विश्व का उत्कृष्ट साहित्व केवल अपने समाज के अस्तित्व के कारण ही दृष्टिगोचर होता है। यदि यूनानी समाज का

ISBN: 978-81-951728-6-3

अस्तित्व विश्व में न रहता, तो आज यूनानी साहित्य का अस्तित्व विश्व में न रहता, तो आज यूनानी साहित्य के दर्शन न होते। वैसे ही यूनानी साहित्य की उत्कृष्टता ने यूनानी समाज को स्थित एंव सजीव बनाया है। इसी तरह भारतीय समाज के अस्तित्व ने विश्व के सर्वाधिक प्राचीन साहित्यक ग्रंथ ऋग्वेद को जीवित रखकर यह सिद्ध कर दिया है कि समाज के अस्तित्व से उसका साहित्य भी शाश्वत एंव अमर हो जाता है। साथ ही ऋग्वेद के अस्तित्व ने भी सिद्ध कर दिया है कि साहित्य की विधमानता समाज को भी शाश्वत एंव अमर बना देती है। आज बेबीलोनिया तथा मेसोपोटामिया की सभ्यता एंव संस्कृति इसलिये अपना अस्तित्व खो चुकी है क्योंकि वहां का साहित्य अभी तक जीवित नहीं है। साहित्य के जीवन पर समाज का जीवन निर्भर करता है और समाज के जीवन पर साहित्य का जीवन निर्भर करता है। साहित्य और समाज दोनो ही चेतना के अभिन्न अंश है और एक के विनाश से दुसरे का भी विनाश हो जाता है। इसलिये विश्व के जिन प्राचीन समाजों का आज अस्तित्व कहीं दिखायी नही देता उसका मूल कारण वहां से साहित्य का नष्ट भ्रष्ट हो जाना है। साथ ही जिस प्राचीन साहित्य का आज विश्व में कही अस्तित्व दिखायी नही देता उसका मूल कारण वहां के समाज का विनष्ट होना है। समाज और साहित्य दोनो परस्पर संबंधित होकर प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ करते है और पारस्परिक सहयोग द्वारा दोनो की समृद्धि एंव समुन्नति हुआ करती है। डॉ. रत्नाकर पाण्डेय ''साहित्य

ISBN: 978-81-951728-6-3

और समाज का अन्योन्याश्रित सबंध मानवता और सभ्यता के विकास का मूल आधार है।''[7]

निष्कर्ष

साहित्य एक ऐसा कोषाणरत है जिसमें प्राचीन से प्राचीन समाज का स्वरूप मिल जाता है क्योंकि समाज तो परिवर्तित होते रहते है और उनके रूप भी युगानुसार बनते बिगड़ते रहते है किंतु साहित्य में वे सभी रूप सर्वदा सुरक्षित रहते है। इसीलिए साहित्य समाज की पांती को बड़ी सावधानी से संजोये रहता है और उसे चित्रित करके समाज को अमर एंव शाश्वत बना देता है। समाज को चित्रित करने के लिये साहित्य ने तीन पद्धतियां अपनायी है 1. प्रथम आदर्शवादी, जिसमें समाज के श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, उज्ज्वल रूप को ही साहित्य में अंकित किया जाता है। 2. दूसरी यथार्थवादी जिसमें समाज की बुराईयों, उसकी कमियों एंव उसके दोषो को नग्नरूप में प्रस्तुत किया जाता है। 3. तीसरी आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, जिसमें समाज का आदर्श रूप भी प्रस्तुत किया जाता है और उसके यथार्थ रूप की झांकी भी प्रस्तुत की जाती है परन्तु अन्त में समाज के मान्य आदर्श का ही समर्थन किया जाता है।

सारांश यह है कि साहित्य की हरी भरी खेती को समाज की खाद, बीज और जल प्रदान करता है, साहित्य के धुम धुआरें काजरेकारे'' एंव आनन्द की वर्षा करने वाले बादलों का सागर ही जन्म देता है, साहित्य के रंग बिरंगे पुष्पो को समाज का बसंत ही विकसित होने का अवसर प्रदान करता है और साहित्य के नीले

ISBN: 978-81-951728-6-3

आकाश को समाज के नक्षत्र एंव तारे ही सुसज्जित किया करते है। समाज के बिना साहित्य पंगु है और साहित्य के बिना समाज अंधा है। समाज साहित्य का कलेवर है और साहित्य समाज की चेतना है। समाज रूपी दिवस की दिवस–मणि साहित्य ही है और साहित्य की संस्कृति, सभ्यता, रीति–नीति, आधार–व्यवहार, ज्ञान–विज्ञान आदि के विकास का बोध होता है। इसलिये किसी समाज के साहित्य में ही किसी समाज की चेतना विद्यमान रहती है। उसके प्राण विद्यमान रहते है और उसका जीवन अंकित रहता है। यही कारण है कि समाज साहित्य को जन्म देता है और साहित्य समाज को सतत् प्रेरणा प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथी सूची

1. *चक्रवाक पत्रिका– संपादक– डॉ. निषांत केतु, पृष्ठ–14*
2. *भाषा के सवाल– डॉ. इन्द्रनाथ मदान, पृष्ठ–38*
3. *साहित्य की महत्ता– महावीर प्रसाद द्विवेदी*
4. *विचार के क्षण– विजयेन्द्र स्नातक, पृष्ठ–13*
5. *कुछ विचार–साहित्य का उद्देश्य– प्रेमचन्द, पृष्ठ–13*
6. *भारत–भारती– मैथिलीशरण गुप्त, पृष्ठ–34*
7. *हिन्दी साहित्य सामाजिक चेतना– डॉ. रत्नाकर पाण्डेय, पृष्ठ–10*